बच्चों की गुम होती प्रश्नाकुलता गंभीर चिंता का विषय है । प्रश्नों से विरति प्रकारान्तर से साहस और प्रतिरोध की संभावनाएं खत्म कर देती है । इस कविता के पार्श्व में कुछ ऐसी ही व्यंजना है ।

उलंग राजा

❑ **नीरेन्द्र नाथ चक्रवर्ती**

बांग्ला से अनुवाद : चंद्रप्रभा पांडेय

सब देख रहे हैं कि राजा निर्वस्त्र है, फिर भी
सब बजा रहे हैं ताली
कह रहे हैं चिल्ला कर सब शाबास, शाबास ।

किसी के मन में हैं संस्कार, किसी के मन में भय,
किसी ने अपनी बुद्धि को रखा है गिरवी किसी और के पास
कोई पराश्रित है, कोई
कृपापार्थी, उम्मीदवार, प्रवंचक,
सोचता है कोई, राज वस्त्र सचमुच है अत्यंत सूक्ष्म,
ऊपर से देते नहीं दिखाई, फिर भी हैं,
अंतत: उनका होना कोई असंभव बात नहीं ।

कहानी सभी जानते हैं ।
किंतु उस कहानी में
कोई प्रशस्ति-वाक्य उच्चारक, कोई
आपाद मस्तक कायर, धोखेबाज, या निर्बोध
स्तुति करने वाला नहीं था ।
था एक शिशु ।

सत्यवादी सरल साहसी एक बालक ।
कहानी का राजा आज वास्तव के प्रकाश भरे रास्ते में
उतरा है, फिर ये लोग निरंतर बजा रहे हैं ताली,
इकट्ठा हो गई है
बंदना करने वालों की भीड़ ।

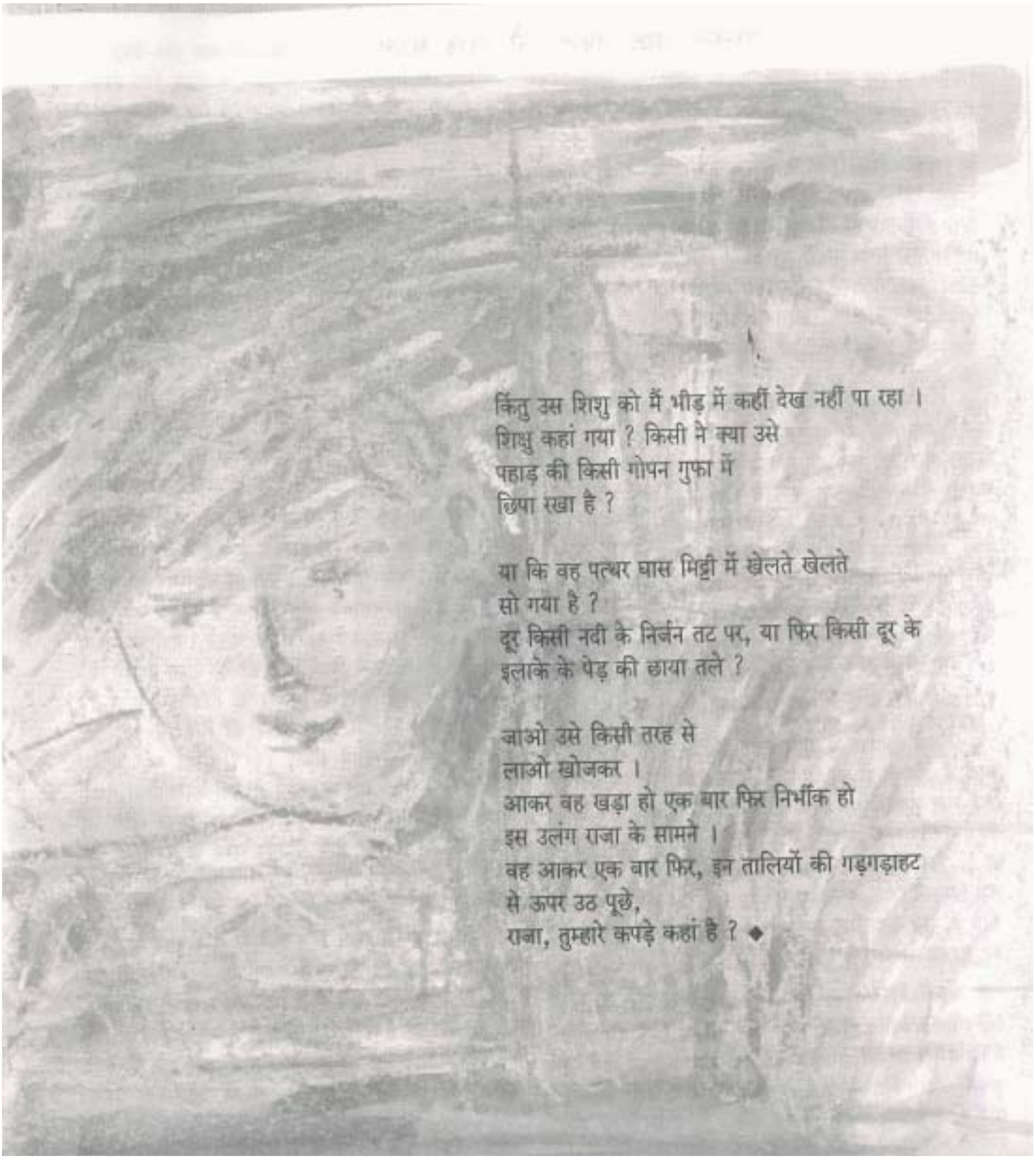

किंतु उस शिशु को मैं भीड़ में कहीं देख नहीं पा रहा ।
शिशु कहां गया ? किसी ने क्या उसे
पहाड़ की किसी गोपन गुफा में
छिपा रखा है ?

या कि वह पत्थर घास मिट्टी में खेलते खेलते
सो गया है ?
दूर किसी नदी के निर्जन तट पर, या फिर किसी दूर के
इलाके के पेड़ की छाया तले ?

जाओ उसे किसी तरह से
लाओ खोजकर ।
आकर वह खड़ा हो एक बार फिर निर्भीक हो
इस उलंग राजा के सामने ।
वह आकर एक बार फिर, इन तालियों की गड़गड़ाहट
से ऊपर उठ पूछे,
राजा, तुम्हारे कपड़े कहां है ? ◆